सतीनाथ षडंगी

अनारको की मन की घड़ी

सारी रात अनारको ने घड़ी की घिरियों और नन्हे-नन्हे पहियों के सपने देखे थे। और यह सब उन करीम चाचा की करतूत थी जिन्होंने कल अनारको को घड़ियों और उनके उर्जों-पुर्जों की बात बताई थी।

करीम चाचा घड़ीसाज़ थे और इतने बूढ़े थे कि वे अनारको के चाचा के चाचा भी हो सकते थे – पर थे वे बच्चे-बूढ़े सभी के चाचा। अफवाह थी कि सारे दाँत गिर जाने के बाद अब उनके नए दाँत उग रहे हैं। वे फुरसत में कम ही मिलते थे, जब भी देखो एक आँख पर गुड़ियों की गिलास जैसा लैंस लगाकर हाथ में बारीक औज़ार लिए कोई न कोई घड़ी सुधारते रहते थे। पर संजोग हो जाए तो क्या नहीं होता!

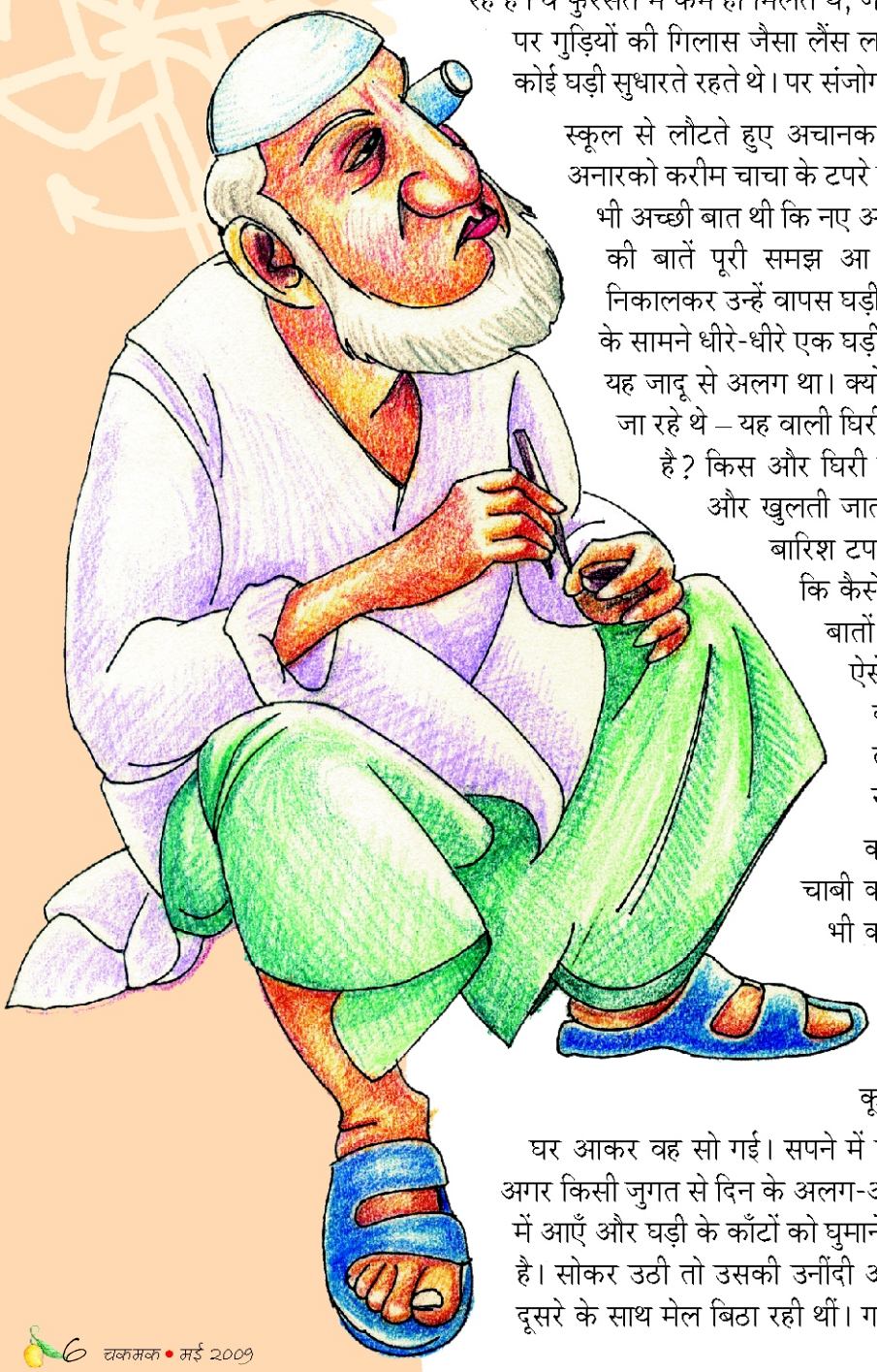

स्कूल से लौटते हुए अचानक बारिश आने लगी। इससे बचने के लिए अनारको करीम चाचा के टपरे में आ गई। आज चाचा फुरसत में थे। उससे भी अच्छी बात थी कि नए आए दाँतों की वजह से आज उसे करीम चाचा की बातें पूरी समझ आ रही थीं। पूछने पर चाचा घड़ी के पुर्जे निकालकर उन्हें वापस घड़ी में लगाने लगे। यूँ समझो कि उसकी आँखों के सामने धीरे-धीरे एक घड़ी पैदा हो रही थी। जैसे कि कोई जादू हो। पर यह जादू से अलग था। क्योंकि चाचा उसे हर पुर्जे के बारे में बताते भी जा रहे थे – यह वाली घिरी यहाँ क्यों लगती है? इतनी धीरे क्यों घूमती है? किस और घिरी को घुमाती है? यह कमानी कैसे खुलती है और खुलती जाती है तो क्या-क्या करतब करती है? बाहर बारिश टपकती रही। अनारको को पता ही नहीं चला कि कैसे एक घण्टा बीत गया था। करीम चाचा की बातों से घड़ियों का रहस्य उसके सामने अचानक ऐसे साफ हुआ जैसे कोई छोटी-मोटी बिजली कड़की हो। जब तक घड़ी वापस बनकर तैयार हुई अनारको घड़ियों के बारे में सारे सवालों के जवाब देने को तैयार हो गई थी।

कोई घड़ी धीरे और कोई तेज़ कैसे चलती है? चाबी क्यों लगानी पड़ती है? काँच फूट जाए फिर भी क्यों घड़ी चलती रहती है? घड़ी सुधारने के लिए कभी-कभी तेल क्यों डालना पड़ता है? किसी-किसी घड़ी में खिलौने वाली चिड़िया कैसे हर घण्टे में बाहर आकर कूकती है? यह सब अनारको समझ गई थी।

घर आकर वह सो गई। सपने में उसे एक बात समझ में आई। बात यह कि अगर किसी जुगत से दिन के अलग-अलग समय में अलग-अलग घिरियाँ हरकत में आएँ और घड़ी के काँटों को घुमाने लगें तो घण्टों की लम्बाई बढ़ाई जा सकती है। सोकर उठी तो उसकी उनींदी आँखों के सामने सपनों में आई घिरियाँ एक दूसरे के साथ मेल बिठा रही थीं। गर्दन के बाल जैसी महीन कमानियों के बीच

सुई से भी बारीक धुरियों पर घूमती घिरियों में ऐसा तालमेल बैठ रहा था कि थोड़े-थोड़े समय बाद घिरियाँ अपनी-अपनी धुरियों पर खिसकते हुए किन्हीं और घिरियों के साथ मिल जाती थीं। इससे उनकी चाल बदलती जाती थी। लग रहा था जैसा घिरियाँ जोड़े बदल-बदलकर एक साथ नाच रही हों।

जैसे-जैसे ये सारे ख्याल आने लगे अनारको मन ही मन अपने मन के मुताबिक घड़ी बनाने लगी। उसने एक ऐसी घड़ी के बारे में सोचा जिसमें सुबह के सात ज़रा देर से बजेंगे। यूँ कि रात सोने के बाद से ही घिरियाँ खिसककर धीरे घूमने वाली घिरियों के साथ चक्कर लगाने लगें। उसने तय किया कि सात बजे उसके नींद से जगने के बाद वह तेज़ चलने वाली घिरियों को चालू कर देगी। इस तरीके से 6 घण्टे का स्कूल 3 ही घण्टे में खत्म हो जाएगा। बीच में खाने की छुट्टी को लम्बा खींचना भी कोई मुश्किल नहीं था। अनारको ने सोचा स्कूल के घण्टों वाले मामले में थोड़ी होशियारी बरतनी चाहिए। दो पीरियड के बीच में इतना समय तो होना ही चाहिए कि टीचर कक्षाओं में आ जा सकें, हाजिरी बुला लें और उन्हें यह भान हो जाए कि उन्होंने पढ़ा दिया और बच्चों ने पढ़ लिया। खाने की छुट्टी को भी उसने इतना लम्बा नहीं किया कि वापस क्लास में जाने का मन ही ना करे। शाम को खेलने की घड़ी इतनी ही लम्बी हो कि घर पहुँचकर सोने से पहले हाथ-पाँव धोकर खाना खाने का समय मिल जाए। और यूँ अनारको के मन में एक नई तरह की घड़ी पैदा हुई। वह इतनी उतावली हो गई कि अगर सिर्फ उतावलेपन से ही कुछ होना होता तो वह सचमुच मन की घड़ी बना ही डालती। पर अनारको को मालूम था कि उसकी घड़ी को बनाने के लिए करीम चाचा के करामाती हाथों की ज़रूरत थी। मन ही मन अनारको उस घड़ी का इन्तज़ार करने लगी जब करीम चाचा फुरसत में रहें और उसके मन की घड़ी बना दें। चक मक

चित्रः दिलीप चिंचालकर